कोलकाता केंद्र की गतिविधियां-2016-17

प्रवेश परीक्षा संपन्न

कोलकाता। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में विभिन्न विषयों में एमफिल तथा पीएचडी में प्रवेश हेतु 31 मई 2016 को प्रवेश परीक्षा संपन्न हुई। कोलकाता केंद्र में कुल 57 विद्यार्थियों ने प्रवेश परीक्षा दी।

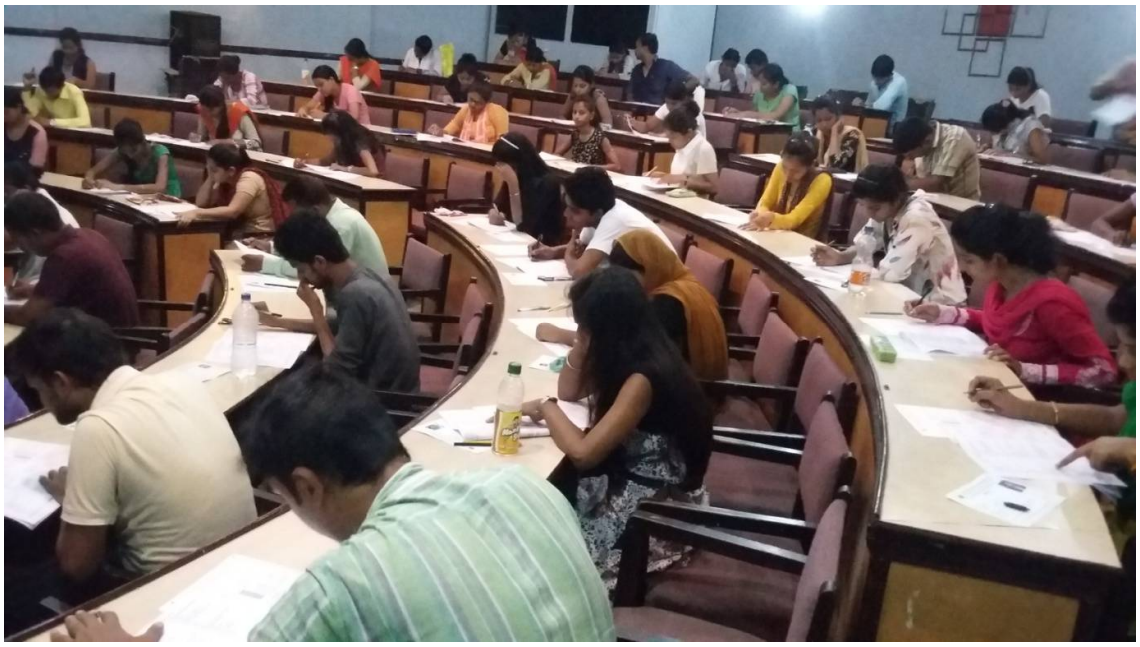

प्रवेश परीक्षा की व्यवस्था वर्धा से आए डा. आलोक कुमार सिंह, कोलकाता केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डा. पीयूष पातंजलि तथा अनुभाग अधिकारी शंभु दत्त सती ने संभाली। मार्गदर्शन कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने किया।

महाश्वेता देवी की याद में शोक सभा

कोलकाता, 28 जुलाई 2016। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र ने 'किंवदंती भारतीय लेखिका महाश्वेता देवी (14 जनवरी 1926-28 जुलाई 2016) के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। कोलकाता केंद्र में आज शाम आयोजित शोक सभा में कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने कहा कि महाश्वेता देवी के निधन के साथ ही भारतीय भाषाओं के साहित्य में एक युग का अवसान हो गया है। वह आवाज मौन हो गई जो देश के आदिवासियों के लिए उठा करती थी।

कोलकाता केंद्र में आयोजित शोकसभा में कर्मियों तथा विद्यार्थियों ने दो मिनट मौन रखकर लेखिका को श्रद्धांजलि अर्पित की।

स्वाधीनता के 70 वर्ष पूरे होने के अवसर पर विविध कार्यक्रमों का आयोजन

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में स्वाधीनता के 70 वर्ष पूरे होने पर विभिन्न कार्यक्रमों की श्रृंखला आयोजित की गई। श्रृंखला की पहली कड़ी में 05 अगस्त 2016 को 'राष्ट्रवाद की अवधारणा' पर विशेष व्याख्यान देते हुए साहित्य समालोचक प्रो. अमरनाथ ने कहा कि जब तक सामंतवाद रहेगा, राष्ट्रवाद आ नहीं सकेगा। उन्होंने कहा कि आज दुनिया में सामंतवाद नाम मात्र के लिए बचा है। अरब देशों में कहीं-कहीं सामंतवाद बचा है। पर कई देशों से उसकी विदाई हो गई है। पड़ोसी देश नेपाल को ही देखिए।

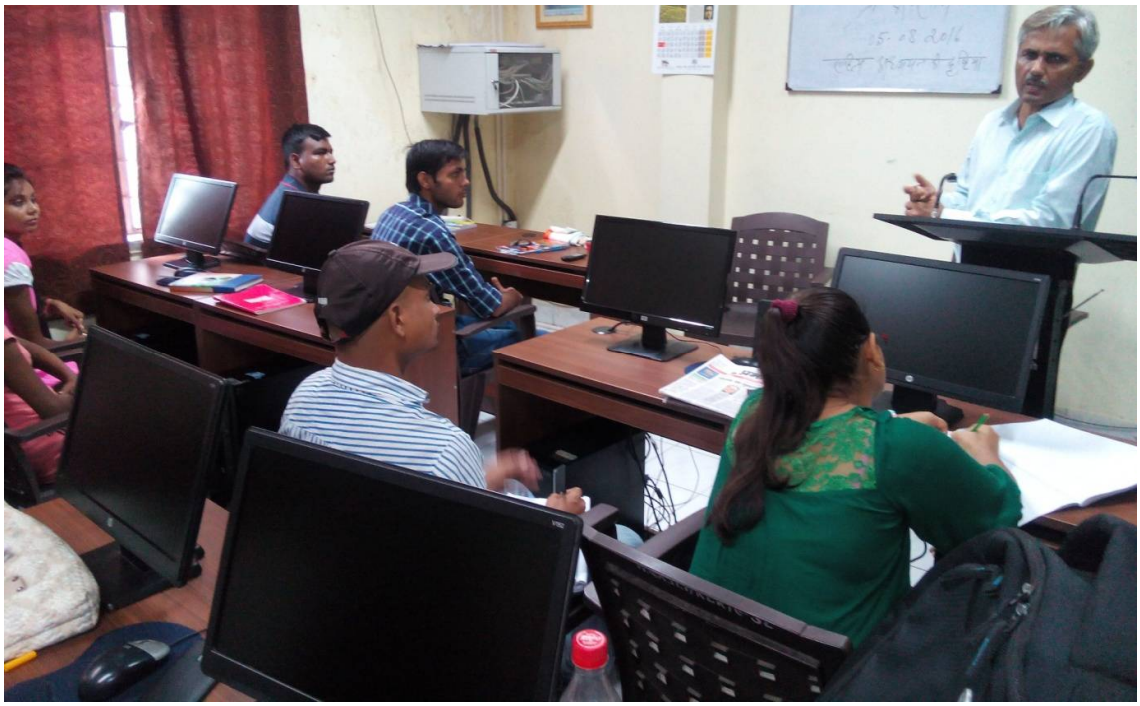

व्याख्यान देते प्रो. अमरनाथ

प्रो. अमरनाथ ने कहा ने कहा कि राष्ट्रवाद की बुनियाद में लोकतंत्र है। लोकतंत्र का मतलब है कि सबके लिए एक कानून हो किंतु भारत में इस्लाम माननेवालों के लिए अलग कानून है। उन्होंने कहा कि भारत में राष्ट्रवाद की चेतना पहली बार 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में दिखी थी। उस संग्राम में हिंदुओं व मुसलमानों ने मिलकर भाग लिया था। उसके बाद राष्ट्रवाद की चेतना भारतेंदु के 'कविवचनसुधा' में स्वदेशी के प्रतिज्ञा पत्र के प्रकाशन में दिखी थी जिसमें विलायती कपड़ा नहीं पहनने का आह्वान किया गया था। उसके बाद राष्ट्रवाद का सबूत 'वंदेमातरम' गीत में दिखा। बीसवीं शताब्दी में 1905 में बंगभंग के खिलाफ टैगोर सड़क पर उतर आए थे पर वे राष्ट्रवाद के पक्ष में न थे। प्रो. अमरनाथ ने कहा कि भारत बहुजातीय राष्ट्र है। एक केंद्रीय शासन व भौगोलिक क्षेत्र में रहनेवाले एक राष्ट्र कहलाते हैं। भारत की संस्कृत लगभग एक है। राष्ट्रवाद में अतिवादिता खतरनाक है क्योंकि वह हमें अंध राष्ट्रवाद की ओर ले जाती है। कार्यक्रम के आरंभ में विश्वविद्यालय के अनुभाग अधिकारी शंभु दत्त सती ने सूत की माला पहनाकर तथा अंगवस्त्रम ओढ़ाकर प्रो. अमरनाथ का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने किया।

श्रृंखला की दूसरी कड़ी में 'स्वाधीनता के 70 वर्षः क्या खोया, क्या पाया' विषय पर 5 अगस्त को **भाषण प्रतियोगिता** आयोजित हुई जिसमें अधिकतर विद्यार्थियों व शोधार्थियों का

कहना था कि स्वाधीनता के बाद भारत में लोकतंत्र मजबूत हुआ है। पड़ोसी देशों में राजनीतिक अस्थिरता रही किंतु भारत में वैसा न रहा। आजादी के बाद प्रौद्योगिकी, रक्षा, आधारभूत ढांचा, स्त्री सशक्तीकरण से लेकर अंतरिक्ष तक के क्षेत्रों में भारत की उपलब्धियां उल्लेखनीय हैं किंतु भ्रष्टाचार जैसी व्याधि को इतने वर्षों में दूर नहीं किया जा सका। अलगाववादी ताकतें चुनौती बनकर सामने खड़ी हैं। राजनीति में हिंसा व अपराध बढ़े हैं। गरीबी आज भी कायम है।

भाषण प्रतियोगिता के समापन पर वक्तव्य रखते डा. कमल किशोर मिश्र। उनके बाएं मदालसा मणि त्रिपाठी तथा रजनीश।

प्रतियोगिता में काजल सिंह, मयंक, मनोज कुमार रजक, रितेश राजवंशी, मौसमी गुप्ता, जीती कौर, नेहा झा, शीला कुमारी गुप्ता, रजनीश कुमार प्रसाद, वंदना सिंह, चंदन साह, कुणाल किशोर, मृणाल राज, रूपा दास, दिव्या दास, राजकुमार साव, अशोक जांगिर, पंकज साव ने भाग लिया। भाषण प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल में शामिल थे, कलकत्ता विश्वविद्यालय में संस्कृत के सहायक आचार्य डा. कमल किशोर मिश्र व सहारा टेलीविजन के व्यूरोचीफ रजनीश। भाषण प्रतियोगिता का संचालन एमफिल हिंदी की शोधार्थी मदालसा मणि त्रिपाठी ने किया।

इसी क्रम में 8 अगस्त को **राष्ट्रभक्ति गीत प्रतियोगिता** हुई जिसमें मयंक, मदालसा मणि त्रिपाठी, काजल कुमारी सिंह, अजय कुमार सिंह, शीला कुमारी गुप्ता, कुणाल किशोर और नेहा झा ने भाग लिया। कार्यक्रम के दूसरे चरण में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों को स्वाधीनता संग्राम के मेरे प्रिय नायक अथवा संविधान में नागरिक के कर्तव्य

व मौलिक अधिकार विषयों में किसी एक पर निबंध लिखना था। इस प्रतियोगिता में मयंक, काजल कुमारी सिंह, मनोज प्रसाद रजक, मदालसामणि त्रिपाठी, शीला कुमारी गुप्ता, रितेश राजवंशी, मौसमी गुप्ता, सरिता राय, रजनीश कुमार प्रसाद, मृणाल राज, पंकज साव, कुणाल किशोर और वंदना उपाध्याय ने भाग लिया।

निबंध प्रतियोगिता में भाग लेते विद्यार्थी

9 अगस्त को विविधता में एकता विषय पर **रंगोली प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया। इसमें विद्यार्थियों व शोधार्थियों के चार समूह बनाए गए थे।

पहले समूह में नेहा चौधरी, जीती कौर, मौसमी गुप्ता और रजनीश प्रसाद ने भारत का मानचित्र बनाकर विविधता में एकता को दर्शाया था।

दूसरे समूह में नेहा झा, रितेश राजवंशी, वंदना सिंह, सरिता राय और शीला कुमारी गुप्ता ने अनेकता में एकता को दर्शाया था।

तीसरे समूह में मयंक, मनोज प्रसाद रजक, मदालता मणि त्रिपाठी, काजल कुमारी सिंह, कुणाल किशोर और राजकुमार साव ने हिंद की विशेषता को दर्शाया था।

रंगोली प्रतियोगिता में भाग लेते विद्यार्थी।

चौथे समूह में मृणाल राज, पंकज साव, रूपा दास और दिव्या साव ने विविधता में एकता को दर्शाया था।

रंगोली प्रतियोगिका के प्रतिभागियों के साथ कोलकाता केंद्र के प्रभारी व अन्य अधिकारी

श्रृंखला के अंतिम चरण में में 12 अगस्त 2016 को पश्चिम बंगाल के अवर पुलिस महानिदेशक तथा हिंदी के सुपरिचित गायक, कवि व अनुवादक मृत्युंजय कुमार सिंह ने अपने भोजपुरी उपन्यास 'गंगारतन विदेशी' के स्वाधीनता संग्राम से जुड़े एक अंश का पाठ किया। श्री सिंह ने वह कथा सुनाई कि कैसे बैरेस्टर गांधी पहले सुधारक और भारत आकर स्वाधीनता के महान सेनानी गांधी बाबा बन गए। मृत्युंजय कुमार सिंह ने गांधी बाबा के दक्षिण भारत से भारत आते ही पहले गोपाकृष्ण गोखले व रवींद्रनाथ ठाकुर से उनके मिलने व साबरमती आश्रम के निर्माण की कथा सुनाई।

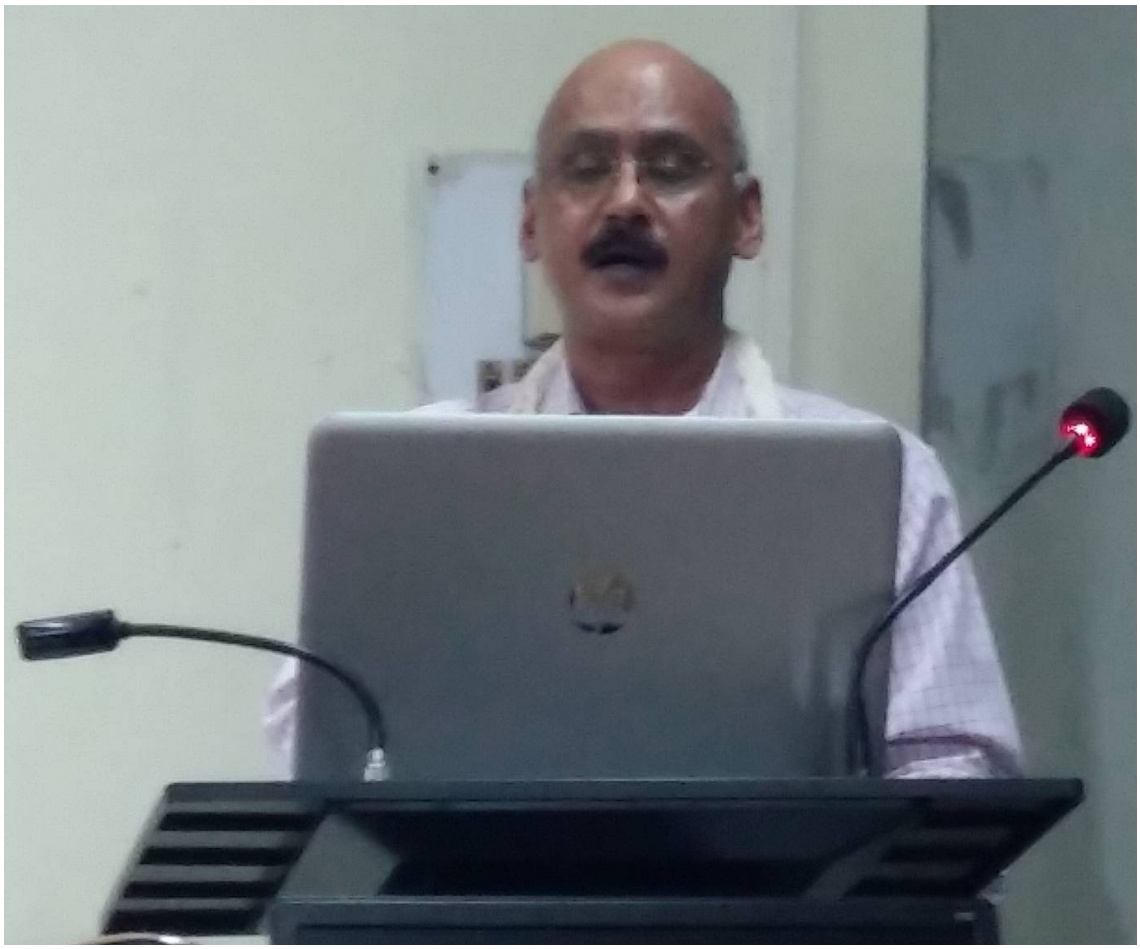

उपन्यास अंश का पाठ करते मृत्युंजय कुमार सिंह

इस उपन्यास की कथा एक ही परिवार की तीन पीढ़ियों के इर्द-गिर्द चलते हुए आगे बढ़ती है। उपन्यास अंश का वह मार्मिक अंश भी श्री सिंह ने सुनाया कि 14 अगस्त 1947 को जब आजादी मिलने पर सभी सत्याग्रही अपने घरों को लौट रहे थे तो गांधी के सान्निध्य में पले-

बढ़े और स्वाधीनता संग्राम में भूमिका निभानेवाले रतनदुलारी नामक सत्याग्रही दिल्ली के इंडिया गेट में बैठे-बैठे सोच रहा था कि वह कहां जाए। उसका तो कोई घर ही नहीं है। इसी बीच वहां पुलिस आई और रतनदुलारी को वहां से हट जाने को कहा वहां स्वाधीनता के उत्सव की तैयारी शुरू होनी थी। तभी वहां पौधों में पानी दे रहे माली ने कहा कि अरे रहम करो, चला जाएगा। भिखारी होगा। अपने आप चला जाएगा। इस पर रतन दुलारी सोचता है कि उसने स्वाधीनता संग्राम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और उसे भिखारी बताया जा रहा है। रचना पाठ के बाद डा. विवेक कुमार सिंह तथा मयंक ने उस पर टिप्पणियां की।

डा. सुनील कुमार सुमन का स्वागत समारोह

कोलकाता, 29 अगस्त। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में कर्तव्यस्थ साहित्य विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डा सुनील कुमार 'सुमन' का आज कोलकाता केंद्र में स्वागत किया गया। स्वागत समारोह की अध्यक्षता करते हुए डा. चंद्रा पांडे ने कहा कि डा. सुनील प्रतिरोध की संस्कृति के प्रतीक हैं।

सुनील कुमार सुमन का सम्मान करते पी. सरदार सिंह। चित्र में सबसे बाएं डा. चंद्रा पांडे तथा सबसे दाएं डा. कृपाशंकर चौबे

हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलसचिव पी. सरदार सिंह ने कहा कि अध्यापन डा. सुनील के लिए मिशन है। सुनील सुमन ने कहा कि कोलकाता केंद्र में वे विद्यार्थियों व शोधार्थियों के मार्गदर्शन के लिए हमेशा मौजूद रहेंगे और अपना शत-प्रतिशत देने की कोशिश करेंगे।

इस अवसर पर कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने कहा कि डा. सुनील के व्यक्तित्व के कई रूप हैं। वे सिर्फ साहित्य के अध्यापक ही नहीं हैं, बल्कि सुपरिचित बाल

साहित्यकार तथा युवा अंबेडकरवादी चिंतक भी हैं। 'दोस्ती' शीर्षक से उनका बालकथा संग्रह प्रकाशित हो चुका है। उनकी एक आलोचना पुस्तक- 'बाल मनोविज्ञान और प्रेमचंद का कथा साहित्य' भी प्रकाशित है। उन्होंने 'एक बार फिर', 'ब्रह्मन्याय', 'अपनी जात', 'बोल कि लब आज़ाद हैं तेरे' जैसे बहुचर्चित नाटक लिखे तो अनेक संवेदनशील और मारक लघुकथाएं भी लिखी हैं। पढ़ाना डा. सुनील के लिए भोजन और नींद की तरह ही जरूरी चीज़ है।